International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 06-11-2019; Accepted: 10-12-2019
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 1; Janauary 2020; Page No. 13-16

आधुनिक भारतीय समाज में पितृसत्ता और स्त्री संघर्ष: चित्रा मुद्गल की रचनाओं मे

प्रवितालक्ष्मी
शोध छात्रा, निर्मला कांलेज, मूवाट्टुपुषा, एरणाकुलम, केरल, भारत

प्रस्तावना

भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन का मूल ढांचा पितृसत्तात्मक राष्ट्रवाद का है लेकिन भारत में स्त्री आन्दोलन भी इसी ढांचे के साथ विकसित होता हुआ दिखाई देता है। उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध और बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध के दौरान विकसित हुए स्त्री आन्दोलन को भारत के तत्कालीन राष्ट्रवादी आन्दोलन स अलग करके नहीं देखा जा सकता है। कई स्तरों पर उनके अपने संघर्ष भी रहे है । इस संघर्ष की शुरुआत वहीं से स्पष्ट होने लगती है जब राष्ट्रवादी आन्दोलन स्त्री की तत्कालीन दशा में सुधार तो लाना चाहते है लेकिन उसे परम्परागत परिवार के दायरे में सीमित रखकर और सामाजिक स्तर पर स्त्री की राष्ट्रमाता की छवी निर्मित करके । जहां न तो स्त्री का स्वतंत्र व्यक्तित्व है और न ही उसकी अस्मिता।

समसामयिक हिन्दी साहित्य में स्त्री संघर्ष पर सबसे अधिक साहित्य सृजन करने वाली लेखिका है चित्रा मुद्गल। चित्रा मुद्गल का संपूर्ण कथा साहित्य सामाजिक सरोकारों का साहित्य है। वे साहित्य को समाज का दर्पण माननेवाली लेखिका हैं। यही सामाजिक परिवेश उनकी रचनाओं में देखने को मिलता है। उन्होंने अपने कथा साहित्य में सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आयामों को पारिवारिक और व्यक्तिगत जीवन की समस्याओं के रूप में चित्रित किया है। अध्ययन की सुविधा के लिए उपन्यास तथा कहानियों में चित्रित आयामों को पृथक -पृथक करके प्रस्तुत किया जा रहा है।

चित्रा मुद्गल के उपन्यास तो बीते दो दशकों की श्रेष्ठतम उपलब्धि माने जा सकते हैं। उनके द्वारा रचित उपन्यास-'एक ज़मीन अपनी','आवां','गिलिगडु' और 'पोस्ट बॉक्स नं-203 नाला सोपारा' समाज के बहुआयामी स्थितियों को उभारने वाले हैं। इनमें चित्रित विषय मुख्य रूप से विज्ञापन दुनिया में स्त्री की स्थिति, उनका शोषण, श्रमिक आन्दोलन, साम्प्रदायिकता, वृद्धावस्था और किन्नरों की समस्यायें हैं।

चित्रा मुद्गल का प्रथम उपन्यास 'एक ज़मीन अपनी'1990 में प्रकाशित हुआ। इसमें उन्होंने मध्यवर्गीय कामकाजी स्त्रियों की अस्मिता की तलाश और उनकी समस्याओं को प्रस्तुत किया है। इसकी नायिका अंकिता माँडलिंग की दुनिया में काम करनेवाली है। प्रेम विवाह करने के लिए वह घरवालों का विरोध करती है। लेकिन सुधांशु से प्रेम विवाह करने के बाद उसे महसूस होता है कि पति के घर में वह एक नौकरानी बन गयी है। उसे स्वयं लगता है कि "मैं सिर्फ गृहिणी ही नहीं हूं.. एक स्त्री भी हूं... आखिर सुबह से रात के बीच कोई एक क्षण ऐसा नहीं हो सकता जिसे मैं नितांत अपने लिए जी सकूं.... कागज़-कलम लेकर बैठ सकूं।"02 लेकिन पति से उसे निराशा ही मिलती है क्योंकि सुधांशु को लगता है, "यह मेरा घर है... और यहां तख्ती वही लटकेगी जैसी मैं चाहूंगा... सुधांशु ने उसकी कविताओं की कॉपी चिथडे-चिथडे कर कूडेदान में फेंक दी थी। वह फटी-फटी आंखों से उन चिथडों को घूरती रह गई थी...उसे लगा था, यह कविता की कॉपी के चिथडे नहीं है, उसके 'स्व' को चिंदी चिंदीकर कूडेदान में फेंक दिया गया है.... और अब वह अपने होने को और अधिक अनदेखा नहीं कर सकती।"03 अंकिता, सुधांशु से रिश्ता तोडकर अपने पैरों में खडे होने का निर्णय कर लेती है और विज्ञापन जगत में आ जाती है। यहाँ एक परिवार की टूटती हालत दिखाई देती है।

एक बार अंकिता रिश्ते में आए दरार के बारे में नीता से कहती है-"हरगिज अलग न होती, अगर मुझे कोल्हू का बैल समझकर, आंखों पर पट्टी बांधे रहने पर मजबूर न किया जाता। ..... अंतिम सीमा तक मैं घर बचाने के लिए हाथ-पांव मारती रही।"04

उपन्यास के अन्त में जब सुधांशु अंकिता को स्वीकार करने के लिए तैयार हो जाता है तब अंकिता कहती है, "सुधांशुजी, औरत बोनसाई का पौधा नहीं है..... जब जी चाहा, उसकी जड़ें काटकर उसे वापस गमले में रोप लिया!.....वह बौना बनाए रखने की इस साजिश को अस्वीकार भी तो कर सकती है!"05 जब चाहा ठुकरा दिया, जब चाहा सहला दिया पुरूष की इस मनमानी को आज की नारी स्वीकार नही करती है।

'आवां' नामक उपन्यास में चित्रा जी ने श्रमिक आन्दोलन के अन्तर्विरोध और नारी के जीवन संघर्ष की गाथा को चित्रित किया है। यह उपन्यास तो बीसवीं सदी के अन्तिम दशक की महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जा सकती है। यह तो ट्रेड यूनियन और स्त्री-विमर्श को केन्द्र में रखकर लिखा गया उपन्यास है। इस उपन्यास में चित्रा जी ने पूँजीवादी व्यवस्था से लडने के लिए बने मज़दूर संगठन को उसी पूँजीपतियों के हाथों बिकने का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। इसके साथ ही साथ महानगरों मे निम्न मध्यवर्गीय महिलाओं की आर्थिक दुर्दशा और यौन शोषण को भी दर्शाया है।

इसका मुख्य पात्र नमिता को घर की आर्थिक कठिनाई के कारण अपनी पढाई छोड देना पडता है। आर्थिक कठिनाई से बचने के लिए माँ की हाथ बँटाती नमिता को भी अपनी माँ से प्रेम की मीठी बोली मिलती नहीं है। वह माँ उसे प्यार करती ही नहीं है।

'गिलिगडु'- नामक उपन्यास में भी पारिवारिक विघटन देखने को मिलते हैं। इसमें जसवंत सिंह और कर्नल स्वामी के माध्यम से वृद्धावस्था में होने वाली पारिवारिक समस्याओं का चित्रण किया गया है।

बाबू जसवंत सिंह को अपनी पारिवारिक माहौल में तिरस्कृत महसूस होने पर लगता है कि "इस घर में एक नहीं दो कुत्ते हैं-एक टॉमी, दूसरा अवकाश-प्राप्त सिविल इंजीनियर जसवंत सिंह! टॉमी की स्थिति निस्सन्देह उनकी बनिसबत मजबूत है। उसकी इच्छा-अनिच्छा की परवाह में बिछा रहता है पूरा घर। उनके लिए किसी को पीछे रहना जरूरी नहीं लगता। टॉमी अच्छी नस्ल का कुत्ता है। सोसाइटी में उनके घर का रूतबा बढ़ाता है। उनके चलते उनका रूतबा कलंकित हुआ।"06

चित्रा मुद्गल द्वारा रचित नवीनतम उपन्यास है -'पोस्ट बॉक्स नं-203-नाला सोपारा' इस उपन्यास में शारीरिक कमी के कारण अपने ही घर से निकाल दिए गए विनोद की मानसीक पीडा को दिखाया गया है। कुछ लोगों को जन्म से ही

शारीरिक कमी होती है। वे अस्तित्व में न पुरुष होते हैं न स्त्री। इन्हें 'हिजडा' कहकर परिवार से अलग करके समाज में एक अलग स्थान दिया जाता है। ऐसे एक व्यक्ति के जन्म लेने से उस परिवार में पारिवारिक संबन्ध टूट जाते हैं। ऐसे बच्चे अपने माँ से अलग होकर त्रासदी पूर्ण ज़िन्दगी बिताने को अभिशप्त होते हैं।

विनोद ने अपनी माँ को लिखे पत्र में अपना दुःख प्रकट किया है-"जिस नरक में तूने और पप्पा ने धकेला है मुझे, वह एक अन्धा कुआं है जिसमें सिर्फ सांप-बिच्छू रहते हैं। सांप-बिच्छू बनकर वह पैदा नहीं हुए होगे। बस, इस कुएं ने उन्हें आदमी नहीं रहने दिया।.... घर में सब लोग कैसे हैं?"07

विज्ञापन जगत का लचीलापन

पत्रकारिता की दुनिया में काम करने के कारण चित्रा मुदगल को विज्ञापन जगत के बारे में पूरण जानकारी है। विज्ञापन जगत का यथार्थ चित्रण चित्रा जी ने अपने उपन्यास 'एक ज़मीन अपनी' में किया है। इसमें उन्होंने विज्ञापन जगत के मारक सच और झूठ, इसके आकर्षण और जगमगाती सफेदी के भीतर छिपे मद-मत्सर और ईर्ष्या की चिड़चिडाहट से हमें परिचित कराया है। अपनी इच्छा के विरुद्ध पुरूषों की दुनिया में एक बिकाऊ चीज़ बनने वाली स्त्री की नियती की ओर इशारा किया है। 'एक ज़मीन अपनी' नामक उपन्यास में अंकिता के माध्यम से इस दुनिया में अपना स्थान बनाये रखने के लिए परिश्रम करने वाली स्त्री को दिखाया है। इसके साथ विज्ञापन के क्षेत्र में फैले विभिन्न कम्पनियों के मालिको के असली व्यक्तित्व का पर्दाफाश भी किया गया है।

फिल्मी दुनिया की तरह विज्ञापन की दुनिया भी ग्लैमर युक्त है। इस दुनिया में स्त्री को मात्र देह रूप का उपयोग करने के लिए आमंत्रित करते हैं। आज के विज्ञापनों में तो उत्पादों की विशेषताओं से ज्यादा स्त्री देह का नग्न प्रदर्शन होता है।

विज्ञापन के क्षेत्र में आने वालों के भी दो वर्ग होते हैं-पहले वर्ग में ऐसी स्त्रियाँ आती हैं जो मेहनत करके इस क्षेत्र में रहने के साथ ही वहाँ कुछ क्रांतिकारी बदलाव लाने का प्रयत्न करती हैं। अंकिता इस श्रेणी में आने वाली है। वे किसी भी हालत में अपने तन को अपनी उन्नती का आधार नहीं बनाती है। अगर ऐसी नौबत आती है तो अपनी नौकरी की चिंता किए बिना अन्याय के विरुद्ध आवाज़ उठाती है। एक बार अंकिता ने मि. मैथ्यू को फटकारा था-"लाभ के लोभ में आप कितना नीचे गिर सकते हैं... मैं साक्षात् प्रमाण हूं उस शोषण का ...आप खातो को मुट्ठी में रखने के लिए मजबूर लडकियों की मजबूरी का फायदा उठाकर उन्हें उनके मनोरंजन के लिए परोसा करते हैं।"08

नारी का यौन शोषण

संपूर्ण स्त्री जाती के लिए यौन शोषण एक अभिशाप है। अगर यह शोषण परिवारवालों द्वारा होता है तो ओर भी भयावह हो उठता है। आधुनिक समाज में समाचार पत्रों के ज़रिए जितने मामले सामने आते हैं उनमें से कई मामले पारिवारिक है। लडकियों पर परिवारजनों द्वारा भी आज अत्याचार होता जा रहा है। यौन शोषण की सुदीर्घ परंपरा है जिसमें स्त्रियों को घुट-घुट कर जीना पडता है और स्वयं को ही अपराधी मानकर धिक्कारती है। कभी-कभी तो वे स्त्रियाँ आत्महत्या करने का भी निर्णय कर लेती हैं।

अंकिता ने कला निर्देशको की कामुकता और यौन शोषण का प्रतिकार किया। कला के नाम पर होने वाले देह शोषण का उन्होंने घोर विरोध किया। वह जानती है कि "ग्लैमर की दुनिया....का समस्त कार्य-व्यापार बेईमानी और सेक्स के बूते पर चलता है।"09

नमिता की सहेली स्मिता का पिता मटका किंग मदन खत्री अपनी ही बेटी को डरा धमकाकर काम-सम्बन्ध स्थापित करके गर्भवती बना देता है। उसकी माँ ने बेटी का गर्भ तो गिरवा देती है लेकिन वह मानसिक रोगी बन जाती है। स्त्री की इस दयनीय हालत पर लेखिका क्षुब्ध हो हठती है। जन्म देने वाला, दुलार करने वाला, रक्षा करने वाला पिता ही कभी-कभी स्त्री का भक्षक बन जाता है। स्मिता अपने पिता मटका किंग मदन खत्री के बारे में बताती है- "वह राक्षस शराबी है..... नमी! शराब से हम सब लड सकते हैं, शैतान से नहीं!..... ताई राक्षस के साथ अकेली घरमें रहने से डरती है।.... पिता के लिए कोई पुत्री देह हो सकती है?"10 यह तो शराब और नशे से भर आधुनिक समाज में हर जगह देखने को मिलता है।

कामकाजी स्त्रियो द्वारा पारिवारिक संघषों का सामना

कामकाजी शब्द का अर्थ है बौद्धिक तथा शारीरिक क्षमताओं का प्रयोग करके जीविकोपार्जन के लिए किए जाने वाला काम। कामकाजी स्त्री वह है जो घर और बाहर काम करनेवाली हो। कामकाजी नारी को जीवन में अनेक संघर्षों का सामना करना पडता है। उसे तो अपनी नौकरी करनी पडती है साथ ही साथ अपने घर के उत्तरदायित्वों से वह मुक्त भी नही होती। दोनों उत्तरदायित्वों को निभाने में उसे बहुत संघषाã का सामना करना पडता है।

नीता तो सुधीर के प्रेम में बंध जाती है लेकिन सुधीर के लिए वह केवल आनंद प्राप्ति की वस्तु थी। नीता को जब अस्पताल में प्रसव के लिए दाखिल किया गया तब वह अंकिता से सुधीर के बारे में कहती है-"दैट बास्टर्ड..... उसने मुझे छला है..... प्रेम-व्रेम कुछ नहीं..... काम-संबन्धों का भूखा भेडिया..... आई हेट हिम।"11 इस प्रकार उसको पारिवारिक संघर्षों का सामना करना पडा।

"उसे पहली बार यह एहसास हुआ था कि कुछ लोग दूर से ही अच्छे लगते हैं, अच्छे होते हैं- हरियाली के बीच गुंथे पोखर-से, जिसका सड़ा हुआ पानी गले से नीचे उतरते ही विष बनकर शिराओं को सुन्न कर देता है।.. मैं घर को जीना चाहती हूं, बरदाश्त करना नहीं..."12 वह भी पारिवारिक संघषाã का सामाना करके विज्ञापन जगत में आ पहूँची।

चित्रा मुद्गल के 'आवां' नामक उपन्यास में निम्न मध्यवर्गीय परिवार का चित्रण हुआ है। इस उपन्यास के केन्द्र में नमिता का परिवार है।

नमिता तो हमेशा अपने परिवार के लिए कडी मेहनत करती रही, लेकिन उसके घर में पारिवारिक सौहार्द न बना सकी। कामकाजी स्त्री होने के बावजूद उसे बहुत सारे पारिवारिक संघर्षों का सामना करना पडा। घर में तो उसे बेटी नहीं पैसा कमाने का उपकरण समझा जाता है। जीवन भर परिवार के लिए मेहनत करने पर भी उसे अपने परिवार वालों से यहाँ तक अपनी माँ से भी प्यार नहीं मिला।

'गिलिगडु' नामक उपन्यास की नारी पात्र है सुनगुनियाँ उसे भी कामकाजी स्त्री होकर पारिवारिक संघर्षों का सामना करना पडा। पति की मृत्यु होने के बाद जेठ ने उसे दूसरा शादी करवाकर उसकी दौलत हडपना चाहा। लेकिन उन्होंने चतुराई से इसका सामना किया। वह अपने बच्चों को लेकर बाबू जसवंत सिंह के घर पहुँच गयी। समाज में अर्थ से प्रभावित होकर भिन्न-भिन्न रूपों को अपना लेने वाली स्त्री और घर-बाहर के दायरों के बीच संघर्ष करने वाली नारी इन दोनों के रूपों को भी उकेरने का प्रयास लेखिका ने किया है।

कामकाजी महिलाओं की समस्याएँ

कामकाजी महिलाओं को तो परिवार और दफ्तर की समस्याओं को झेलना पडता है। दोनों जगहों में अपने उत्तरदायित्वों को पूर्ण रूप से निभाने में उसे बहुत मेहनत करनी पडती है। इसके साथ-साथ कामकाजी महिलाओं के साथ कई पुरुष अधिकारी अत्याचार भी करते हैं।

चित्रा मुद्गल ने जितनी सफलता से गृहणियों के जीवनदायी स्वरूप को चित्रित

किया, उतनी ही दक्षता से कामकाजी महिलाओं की समस्याओं को भी प्रस्तुत किया है।

'स्टेपनी' नामक कहानी में आभा को उसका पति विनोद 'मोहरे' के समान इस्तेमाल करता है। आभा तो दिन भर काम करके इतनी थक जाती है कि पति को संतुष्टि प्रदान करने में हार जाती है। पडोसिनों से पता चलता है कि उसकी अनुपस्थिति में नौकरानी बताशा और विनोद के बीच अवैध संबंध है। आभा घर और नौकरी दोनों को अच्छी तरह देख नहीं सकती, अपने ही घर परिवार के लिए वह स्टेपनी बन जाती है। ''न नौकरी छोड़ने की सुविधा है उसके पास, न नौकरी करने की। .....अपने 'स्व' का संतुलन खोजते हुए कब वह अपने ही घर के लिए स्टेपनी हो गई और बताशा मुख्य....'' 13

'दरमियान' नामक कहानी में स्त्री की समस्याओं का चित्रण हुआ है। इसमें स्त्री संवेदनाओं को पूर्ण रूप से प्रस्तुत किया है। नौकरीपेशा स्त्रियों के लिए बच्चे को पालना कितना कठिन है, इसका चित्रण इस कहानी से मिलता है। स्त्री की शारीरिक समस्याएँ कैसे उसे कमज़ोर बनाती हैं और किस मनोस्थिति से गुज़रना पडता है इसका चित्रण चित्रा जी ने गढ़ा है। इसमें आकांक्षा सोचती है कि- ''पीड़ा पेट में घुमड़ती .... क्यों हुई वह औरतजात! औरत होना नरक है, नरक!..... सारी-की-सारी दौड़ती औरतें, दौडती नहीं, लंगड़ाती।''14 कामकाजी नारी बाहर के माहौल में व्यस्त रहकर भी बच्चों से जुड़ी रहती, पल-पल उनकी चिंता में डूबती रहती है।

'प्रमोशन' नामक कहानी में भी कामकाजी नारी की पारिवारिक समस्याओं का चित्रण देखा जा सकता है। कामकाजी नारी यदि अपनी मेहनत, लगन और परिश्रम से तरक्की प्राप्त करती है तो कुछ पति सोचते हैं कि बाँस के साथ उसका नाजाइस संबन्ध होंगे। ललिता सोचती है- ''पुरुष की पदोन्नति हो तो वह उसकी लगन और मेहनत का परिणाम है, स्त्री अगर..... उन्नति करे तो वह उसकी अपनी प्रतिभा नही, किसी... की अनुकंपा है..''15 'प्रमोशन' कहानी में ललिता को जब डॉ. कोठारी ने पैकिंग विभाग में इंचार्ज नियुक्त किया तब पति सुभाष के मन में शक जन्म लेता है। सुभाष के अनुसार प्रमोशन ऐसा ही प्राप्त नहीं होते। वह कहता है -''डॉ. कोठारी की अनुकंपा है.....और बीच में शरीर आए बिना यह संभव नहीं।''16 यह प्रमोशन की समस्या तो सिर्फ नारी के लिए ही खडी होती है। जब पुरुष की पदोन्नति होती है तो वह उसकी अपनी प्रतिभा से है और जब स्त्री की होती है तो किसी बाँस की अनुकंपा से है। जब कामकाजी नारी का प्रमोशन पति के लिए संशय का कारण बनता है तो पति उसे नौकरी छोडकर घर बैठने को विवश बनाता है।

नारी जागरण

'बावजूद इसके' नामक कहानी की नायिका प्रीति के साथ उसका पति गोयल बुरा सलूक करता है। पति की वजह से ही प्रीति की बेटी मोना का स्वर्गवास हो जाता है। अंत में वह गोयल को छोडकर मैके चली जाती है और एक होटल में नौकरी करने लगती है। वह गोयल के पास वापस जाना नहीं चाहती थी, प्रीती सोचती है- ''कहां-कहां से भागेगी? गोयल के लिए नौकरी छोड दे? लौट जाए? भैया के लिए करती रहे?.....लड़ाई खुद की है, फिर?...''17 गोयल को वह तलाक के कागज़ात भेजती है। नौकरी के साथ अपने भाई की सहायता भी मिलने पर वह आत्मनिर्भर होकर सधैर्य आगे बढती है।

'प्रमोशन' कहानी में नायिका ललिता को प्रमोशन मिलती है तो पति सुभाष को शक होता है। उसे लगता है कि ललिता ने बाँस डॉ कोठारी के साथ अनैतिक संबंध स्थापित किया है। इस बात को लेकर जब सुभाष ललिता से नौकरी छोडने की बात कहता है तब वह मना कर देती है और कहती है-''न नौकरी मैंने तुमसे पूछकर की थी, न तुम्हारे कहने पर छोडूँगी।..... तुम्हारी कुंठाओं द्वारा रचा हुआ सत्य मेरी नियती नहीं बन सकता।''18 जब नारी को पराधीनता का एहसास हो जाता है तब वह स्वतंत्रता पूर्वक, आत्मनिर्भर बनकर अपना जीवन जीना चाहती है।

''हस्तक्षेप' नामक कहानी 'एक ज़मीन अपनी' उपन्यास का एक भाग है। इस कहानी की मुख्य पात्र अंकिता और उसकी सखी नीता के बीच में नारी अस्मिता को लेकर बहस होती है। इसमें नीता अपने आप को स्त्री मुक्ति की चेतना का संवाहक मानती है। नीता देह प्रदर्शन द्वारा धन कमाने को बुरा नहीं मानती, लेकिन अंकिता सवाल करती है कि, क्या यह स्त्री स्वतंत्रता है? अंकिता के अनुसार नारी अभी भी पुरुषों द्वारा इस्तेमाल किया जा रहा है। अंकिता कहती है - ''स्त्री के अस्तित्व की तलाश तब तक पूरी नहीं होगी, नीता, जब तक वह वर्गों में बंटकर, निजी स्वार्थों और सुविधाओं में उलझी, विभाजित होकर जीति रहेगी.....''19 इस कहानी में चित्रा जी ने विदेशी संस्कृति का भारतीय लोगों पर आए प्रभाव और उससे मुक्त अंकिता जैसी नारी को भी प्रस्तुत किया है। इसमें नारी मुक्ति और जागरण के दो पहलू दृष्टव्य है।

आर्थिक तंगी से पीडित नारी

हमारे समाज में तो स्त्रियाँ चाहे उच्च, मध्य या निम्न वर्ग के हों शोषण के शिकार हैं। नारी अपने परिवार को संभालने के लिए हमेशा प्रयत्न करती रहती है। आर्थिक तंगी से, जूझती निम्न और मध्य वर्ग की स्त्रियों को घर और बाहर के श्रम में पिसती परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करना पडता है। स्त्री की अपेक्षा अधिक कमानेवाला मज़दूर पुरुष तो अपनी कमाई का अधिकांश भाग शराब की भेंट चढा डालता है। औरतों द्वारा कमाया गया भोजन खाकर उसे ही मारने-पीटने का अधिकारी बन जाता है।

चित्रा जी द्वारा लिखित ''भूख' नामक कहानी में भी निर्धन विधवा नारी की भयानक त्रासदी का चित्रण प्रस्तुत है। विधवा लक्ष्मा अपने तीन बच्चों के पेट भरने के लिए मजदूरी की तलाश में जगह-जगह भटकती है लेकिन सफलता नहीं मिलती। लक्ष्मा सोचती है-'' बच्चे बच सकते हैं। .... छोटू को उस भिखमंगी औरत को किराये पर उठा दे तो? छोटू का पेट भरेगा....बड़े और मझले के पेट में भी दाने पड़ जाएंगे।''20 आर्थिक तंगी से निरूपाय होकर अपने दूधमुंहे बच्चे को किराए पर एक भिखारिन को दे देती है ताकि प्रतिदिन दो रुपये प्राप्त हो। भीख ज़्यादा मिलने के लिए भिखारिन बच्चे को भूखा रखकर रूलाती रहती है। एक दिन बच्चा भूख से तडपकर मर जाता है। निर्धन विधवा की भयानक त्रासदी यहाँ दृष्टव्य है।

कामकाजी नारी का शोषण

आधुनिक समाज में जब नारी को रोज़गार के अवसर मिले तब उसकी समस्याओं में भी वृद्धि आ गयी। नौकरी के द्वारा औरत को हैसियत और आज़ादी मिली लेकिन कार्यस्थल पर उसकी हालत बेहतर नहीं हुई, न ही उन्हें घर के कामकाज और उत्तर दायित्व से छुट्टी मिली। कार्य क्षेत्र में भी नारी को कई समस्याओं का सामना करना पडता है। पुरुषो की तुलना में स्त्री को कम वेतन मिलना एक समस्या है। उसकी प्रतिभा की उपेक्षा करके निम्न स्तरीय काम करने पर बाध्य किया जाना भी उसकी नियती है। इसके साथ साथ नारी को दैहिक और मानसिक शोषण का शिकार भी होना पडता है।

कामकाजी नारी को घर और बाहर दोनों जगह दैहिक शोषण का शिकार बनना पडता है। जब नारी संयुक्त परिवार का हिस्सा रही तब उसे अपने सम्बन्धियों की कामुक चेष्टाओं का शिकार होना पडा। आगे जब नारी अपनी देहरी से बाहर निकलकर खुले वातावरण में आ गयी तब उसे अपने सहकर्मियों और बाँस की कुचेष्टाओं का शिकार होना पडा।

चित्रा मुद्गल की 'दरमियान'नामक कहानी में नलिनी आर्ट-डिपार्टमेंट में काम करनेवाली है। वह अपने बाँस की हरकतो को बर्दाश्त नहीं कर पाती और

उसको थप्पट मारती है। कामकाजी महिलाओं को कभी कभी अपने सहकर्मी पुरुषो की बातचीत और व्यवहार, अनुचित अमर्यादित और अशिष्ट लगते हैं लेकिन उन्हें सहन करने के अलावा और कोई चारा नहीं होता है। ‘‘पुरूष... रावण के वंशज प्रतीत होते हैं, ..दस जोड़ी भुजाएं ही नहीं, दस जोड़ी आंखें भी है।’’21

चित्रा मुद्गल की साहित्यिक अभिव्यक्ति की प्रेरणा हमेशा सामाजिक सरोकार रही है। उन्होंने अपनी कहानियों में आधुनिक सामाजिक समस्यायों जैसे पारिवारिक विघटन, स्त्री-पुरुष संबन्ध में आए बदलाव, नारी शोषण, बदलते जीवन संदर्भ आदि को आधार बनाया है। चित्रा जी ने इसके साथ-साथ आधुनिक युग में बढते आर्थिक अपराधों को भी उजागर किया है। इसमें समाज के तीनों वर्ग-उच्च, मध्य, और निम्न वर्गीय व्यक्तियों की मानसिकता तथा उनकी परिस्थितियों का चित्रण किया गया है। आधुनिक युग में भौतिकता के कारण समाज में होने वाले आर्थिक शोषण, असमानता, रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार, बलात्कार, वेश्यावृत्ति, अपहरण, हत्या आदि को लेखिका ने यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है। अर्थ के पीछे भागते हुए मानव के अन्दर की मरी हुई मानवीय चेतना को चित्रा जी ने बडी सजगता से चित्रित किया है।

संदर्भ सूची

1. डाक्टर रामगोपाल शर्मा दिनेश: मानवाधिकारों का भारतीय परिवेश - भूमिका से
2. चित्रा मुद्गल: एक ज़मीन अपनी, पृ.24
3. चित्रा मुद्गल: एक ज़मीन अपनी, पृ.24-25
4. चित्रा मुद्गल: एक ज़मीन अपनी, पृ.21
5. चित्रा मुद्गल: एक ज़मीन अपनी, पृ.235
6. चित्रा मुद्गल: आवां, पृ. 523
7. चित्रा मुद्गल: गिलिगडु, पृ.96
8. चित्रा मुद्गल: पोस्ट बॉक्स नं.203-नाला सोपारा, पृ.11
9. चित्रा मुद्गल: एक ज़मीन अपनी, पृ.236-237
10. चित्रा मुद्गल: एक ज़मीन अपनी, पृ.237.
11. चित्रा मुद्गल: आवां, पृ.44
12. चित्रा मुद्गल: एक ज़मीन अपनी, पृ.210
13. चित्रा मुद्गल: एक ज़मीन अपनी, पृ.23
14. चित्रा मुद्गल: आदि-अनादि -3, पृ.64
15. चित्रा मुद्गल: आदि-अनादि -2, पृ.171
16. चित्रा मुद्गल: आदि-अनादि -2, पृ.263
17. चित्रा मुद्गल: आदि-अनादि -2, पृ.263
18. चित्रा मुद्गल: आदि-अनादि -1, पृ.126
19. चित्रा मुद्गल: आदि-अनादि -2, पृ.264
20. चित्रा मुद्गल: आदि-अनादि -2, पृ.245
21. चित्रा मुद्गल: आदि-अनादि -2, पृ.103
22. चित्रा मुद्गल: आदि-अनादि -2, पृ.171